RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-12
December -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा

डॉ० पवन कुमार

सहायक प्रध्यापक (अतिथि) इतिहास विभाग तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Dec 2019

Keywords
समाज, परिवार, महिलाओं की शिक्षा, संशक्तीकरण, जागरूकता।

ABSTRACT

समाज सामाजिक संबंधों का जाल है। जिसका आधार परस्पर निर्भरता मौलिक आवश्यकताओं की पूर्त्ति एवं नर–नारी का सम्मेलन है। महिलाओं की परिवार और समाज में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों प्रकार की भागीदारी सुनिश्चित रहती है। उसके द्वारा घर एवं बाहर के कार्यों को बड़ी सहजता एवं सफलता के साथ निर्वहन किया जाता है। इसके बावजूद महिलाओं को समाज के ठेकेदारों ने विभिन्न प्रकार की सुविधाओं एवं अधिकारों से वंचित कर रखा है। वे घर के समस्त कार्यों को तो करती है लेकिन चल–अचल सम्पत्ति से वंचित है, उन्हें मुखग्नि का अधिकार नही है। कृषि के लगभग सभी कार्यों को करती है लेकिन किसानों नहीं कहलाती हैं। दुनिया की आधी आबादी शोषित रहेगी तो विकास सवंभव नही होगा। इस लिये शिक्षा ही एक मात्र ऐसा सशक्त माध्यम है, जो चहुँमुखी विकास करती है। बिना शिक्षा के एक उन्नत मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। और तब बात जब परिवार और समाज की बागडोर संभालने में प्रमुख स्तम्भ के रूप में कार्य करने वाली महिलाओं की हो रही हो तब ऐसे में शिक्षा और महिला शिक्षा की उपयोगिता अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

प्रस्तावना :–

दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है। इसके बाद भी महिलाओं का सर्वाधिक शोषण होता है। वह शोषण चाहे जिस रूप में हो। चाहे– यौन शोषण, दैहिक शोषण, आर्थिक शोषण, व्यवसायिक शोषण आदि हो, हर जगह महिलायें शोषण का केन्द्र बिंदु होती है। महिलायें परिवार की आधारशिला है सम्पूर्ण परिवार की धुरी महिलाएँ हैं। बच्चों के लालन–पालन से लेकर पति की मानसिक, आर्थिक अथवा सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्त्ति माँ/पत्नी द्वारा ही की जाती है।[1] यदि ऐसे में महिला सक्षम नहीं है तो उस परिवार का विकास कैसे हो सकता है। इस तरह महिलाओं का जीवन के समस्त क्षेत्रों में महत्व होने के बावजूद भी उन्हें महत्वहीन समझा जाता हैं एवं उनकी उपेक्षा की जाती है।[2] यही कारण है कि महिलाओं की पुरूषों की अपेक्षा साक्षरता अनुपात भी कम है। सच तो यह है कि जब साक्षर महिलायें शोषण का शिकार है तो निरक्षर महिलाओं की दशा क्या होगी? सबसे ज्यादा समस्याग्रस्त ग्रामीण निरक्षर महिलायें हैं क्योंकि वे निरक्षर तो है ही साथ ही वे ग्रामवासी है। जहाँ रोजगार के संसाधनों की अनुपलब्धता पायी जाती है। इस कारण ग्रामीण महिलायें रोजगार से वंचित रह जाती है। ग्रामीण परिवेश की महिलायें अक्षरज्ञान से भी वंचित रह जाती है। इस कारण उन्हें अपने अधिकारों की जानकारी नहीं होती है। उन्हें रोजगारों के संसाधनों की जानकारी नहीं होती है।[3] जिसके कारण उनके विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

महिलाओं को साक्षरता के माध्यम से सशक्त बनाया जा सकता है। अशिक्षा सम्पूर्ण अज्ञानता की जननी है, एवं शोषण का आधार। इसलिए यदि समाज का, गांव का, महिलाओं का उत्थान करना है, तो इन्हें शिक्षा के महत्व को समझना होगा। गांवों में बड़े–बड़े पोस्टर, एवं मुनादी के माध्यम से सरकारी योजनाओं के बारे में बताया जा सकता है। जिसका महिलिाये लाभ प्राप्त कर सकें। सरकार को चाहिए की स्कूल में, कॉलेज में, महाविद्यालयों में एक जन–सम्पर्क विभाग की भी स्थापना करे, जो लोगों से सम्पर्कक स्थापित कर शिक्षा के लाभ, शिक्षा संबंधी योजनाओं, सरकार द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी ही न दे बल्कि यह विभाग शिक्षा के विभिन्न रोजगारपरक कार्यक्रमों के क्षेत्रों की जानकारी एवं मंत्रणा भी दे।[4] ताकि वे वर्त्तमान के बदलते परिदृश्य के अनुसार अपने कैरियर का चुनाव कर सकें। ग्रामीण निरक्षर महिलाओं का विकास तभी हो सकता है, जब उन्हें विकास हेतु चलाई जा रही योजनाओं के लाभों से परिचित कराया जायेगा। महिलाओं के व्यक्तित्व के विकास करने हेतु उनका समाजीकरण किया जाये। स्त्रियों को पुरूषों

RRIJM 2015, All Rights Reserved

के समान शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये जायें। विद्यालयों तथा अन्य शैक्षिक संसथाओं में महिलाओं की संख्या बढ़ाने के उपाय किये जाने चाहिए।[5] शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्थानों में महिलाओं के प्रति सांस्कृतिक एवं आर्थिक पूर्वाग्रहों के प्रभाव को कम करने के लिए अब अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता है। यह महिलाओं की सृजनात्मक क्षमता विकसित करने के लिए अब अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता है। महिलाओं की भर्त्ती प्रशिक्षण तथा विकास कार्यक्रमों के प्रसार के लिए विशेष प्रयास किरना चाहिए। इसके साथ–साथ व्यवसायिक क्षेत्र में भी महिलाओं के प्रवेश को प्रोत्साहित करना चाहिए। देश के सभी ग्रामीण, दूरस्थ, पिछड़े, और जनजातीय क्षेत्रों में कम से कम प्राथमिक स्तर तक के विद्यालय सभी छोटे गांवों में खोलना सुनिश्चित किया जाये, ताकि विशेष रूप से बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने गांवों के बाहर न जाना पड़े। प्रौढ़ महिला और पुरूषों में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का पुनः महत्व दिया जाना आवश्यक है। समाजिक कुरितियों और अंधविश्वासों से निजात दिलाने में शिक्षा की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।[6] अतः इसके लिए जनजागरण और जनजागृति के महत्वपूर्ण अभियान विशेष्ज्ञकर टी.वी और रेडियो कार्यक्रमों को तैयार कर उन्हें जनता के बीच ले जाने से किये गये प्रयास काफी सफल हो सकेगें।

- महिलाओं की शिक्षा और प्रशिक्षण को प्रोत्साहित करने वाले सिफारिशों को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है।
- प्रारंभिक शिक्षा के सर्वसुलभीकरण को सुनिश्चित करने और विद्यालय बीच में ही छोड़ने और गतिरोध को कम करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएँ।
- सभी शैक्षिक स्तरों पर महिलाओं को समान अवसर प्रदान किये जायें।
- व्यवसायिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा तथा कला–कौशल के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- पाठ्यक्रम लिंगभेद विहीन होना चाहिए।
- विद्यालयों का समय स्थानीय स्थितियों के अनुसार होना चाहिए।
- महिलाओं के सामने आने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए, मुक्त शिक्षण पद्वति व्यवस्था अंशकालिक शैक्षिक कार्यक्रम तथा विद्यालयों एवं कॉलेजों का समय कृषि चक्र के साथ तालमेल, नामांकन बढ़ाने तथा शिक्षा चालू रखने में सहयोग देगा।[7]
- प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं के मुद्दे और उनसे संबंधित विषय नयी प्रौद्योगिकी की जानकारी और प्रशिक्षण प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों का अंग है।
- महिलाओं के लिए शैक्षिक प्रक्रिया में भागीदारी के लिए और अधिक शैक्षिक संस्थायें खोलने के बजाए उसकी स्थिति में सुधार और क्षमता में वृद्धि करने पर जोर दिया जाए।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यदि इन तमाम बातों का ध्यान रखा जाए तो देश में महिलाओं और बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति थोड़े ही समय में अच्छा प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगेगा। हमें इस दिशा में पूरी समाजिक, राजनैतिक और प्रशासनिक प्रतिबद्धत्तता के साथ निरंतर और अथक प्रयास करने होगें, तभी हम महिला के अपने नारे को और स्वप्न को मूर्त्त रूप प्रदान करने में सफल होगें।

संदर्भ सूचीः–

1. अग्रवाल, बी., एशिया और प्रशान्त में महिलाओं का अध्ययनः वर्त्तमान स्थिति एवं आवश्यक प्राथमिकताओं की समीक्षा, पृ०–61.
2. अग्रवाल, जे.सी., भारत में प्रौढ़ शिक्षा, विद्या विहार, नई दिल्ली, पृ०–83.
3. अहूजा, राम., समाजिक अनुसंधान (2007), रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ०–127.
4. ओझा, एस.एन., भारत की समाजिक समस्यायें, क्रानिकल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ०–23.
5. बोहरा, आशारानी, स्त्री सरोकार, आर्य पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ०–18.
6. मुखर्जी रविन्द्रनाथ, भारतीय समाजिक संस्थायें, षष्ठम् संस्करण, 1985, पृ०–76.
7. लवानिया, डॉ० एम. एम., भारतीय महिलाओं का समाज–शास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ०–66.

RRIJM 2015, All Rights Reserved